# फुलब्राइट कार्यक्रम
# शैक्षिक आदान-प्रदान के 60 वर्ष

लॉरिंडा कीज लौंग

वर्ष 1946 में आर्कान्सस के सेनेटर जे. विलियम फुलब्राइट द्वारा कांग्रेस में प्रस्तुत विधेयक के अन्तर्गत स्थापित फुलब्राइट कार्यक्रम के कारण 267,500 से अधिक प्रतिभागियों को किसी दूसरे देश में पढ़ने, पढ़ाने और शोध करने के अवसर उपलब्ध हो पाए हैं।

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पेम्ब्रोक कॉलेज के मास्टर आर.बी. मैक्कैलम कहते हैं, ''फुलब्राइट कार्यक्रम के कारण 1453 में तुर्क सम्राज्य के पतन के बाद विश्वभर में विद्वानों के आवागमन की सबसे बड़ी घटना संभव हुई।'' रोड्स अध्येता के तौर पर फुलब्राइट ने भी पेम्ब्रोक कॉलेज में अध्ययन किया था। वैसे तो संसार के इस सबसे बड़े शैक्षणिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के लिए धन उपलब्ध करवाने का श्रेय अक्सर सेनेटर फुलब्राइट को दिया जाता है लेकिन सच्चाई यह है कि इसके लिए वित्तीय सुविधा द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उपलब्ध अतिरिक्त अमेरिकी विदेशी मुद्रा कोष के कारण मिल पाई थी। आज इसके लिए धन अमेरिकी करदाता, लागत-साझेदारी, करों में छूट और अन्य किस्मों के सहयोग के माध्यम से सहभागी विश्वविद्यालयों द्वारा और उन लगभग 150 देशों से मिलता है जहां यह कार्यक्रम सक्रिय है।

### यूसेफी की गतिविधियां:

- भारतीय और अमेरिकी छात्रों, अध्यापकों और व्यावसायिक कार्मिकों के लिए फुलब्राइट फेलोशिप और अन्य अध्ययनवृत्तियों के आदान-प्रदान का संचालन।
- शैक्षणिक आदान-प्रदान के लिए विस्तार के रूप में फुलब्राइट अध्येताओं और उनके समुदायों के बीच संवाद बढ़ाना।
- अमेरिका में उच्च शिक्षा पाने के इच्छुक भारतीयों के लिए शैक्षणिक सलाह सेवा।

भारत में फुलब्राईट कार्यक्रम की शुरूआत 2 फरवरी 1950 को प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और राजदूत लॉय हैंडरसन द्वारा ''शैक्षणिक संपर्कों के माध्यम से ज्ञान और व्यावसायिक प्रतिभा के व्यापक आदान-प्रदान के माध्यम से'' भारतीयों और अमेरिकियों के बीच आपसी समझदारी बढ़ाने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर करने से हुई। इस समझौते के परिणामस्वरूप युनाइटेड स्टेट्स एजुकेशनल फंड इन इंडिया (यूसेफी) का गठन हुआ जिसका संचालन भारत सरकार और अमेरिकी दूतावास द्वारा चुने गए 10 लोगों का बोर्ड करता है।

1950 से अब तक 4,000 भारतीय और 3,600 अमेरिकी अध्येता इस कार्यक्रम में भाग ले चुके हैं और हर साल करीब 200 फुलब्राइट अध्येता भारत और अमेरिका की यात्रा करते हैं। इसके अलावा यूसेफी द्वारा संचालित अन्य अध्ययनवृत्तियों और छात्रवृत्तियों के लाभार्थियों की संख्या अलग हैं।

1 अगस्त 1946 को अपने लाए कानून के फलस्वरूप शैक्षणिक वातावरण में दूसरी संस्कृति से परिचय से लाभान्वित हुए लोगों से मिलकर फुलब्राइट इस अनुभव के लाभों को लेकर और भी आश्वस्त महसूस करते थे। बहुत गरीब और लाभ से वंचित लोगों को शिक्षा उपलब्ध करवाने के संबंध में आयोजित एक सम्मेलन को संबोधित करने के लिए अक्टूबर में भारत आई सेनेटर फुलब्राइट की पत्नी हैरियट फुलब्राइट बताती हैं कि फुलब्राइट अध्येताओं में 34 नोबेल पुरस्कार विजेता भी शामिल हैं, ''जो अपनी सफलता का श्रेय बहुत बड़ी हद तक अध्ययनवृत्ति के माध्यम से मिले अंतर्राष्ट्रीय अनुभव को देते है।'' श्रीमती फुलब्राइट खुद भी एक शिक्षाविद हैं और कोलंबिया, दक्षिण कोरिया और सोवियत संघ में काम कर चुकी हैं। सेनेटर फुलब्राइट से उनकी मुलाकात वाशिंगटन डी.सी. में फुलब्राइट एसोसिएशन की कार्यकारी निदेशक के रूप में हुई थी। वह याद करती है, ''जब भी कोई फुलब्राइट अध्येता मुझसे मिलता है तो यही कहता है - (इस अध्ययनवृत्ति के कारण) मेरा जीवन बदल गया।''

अपने पति के बारे में बात करते हुए श्रीमती

*विश्व बैंक एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की दिल्ली में आयोजित कॉन्फ्रेंस में भाग लेने के लिए सेनेटर फुलब्राइट (दाएं) अक्टूबर 1958 में भारत आए। उनके साथ अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि मंडल भी आया। सेनेटर फुलब्राइट और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को उन दिनों चेन्नई के वाईएमसीए कॉलेज में पढ़ा रहे फुलब्राइट एक्सचेंज प्रोफेसर मैक ग्रीन (बाएं से दूसरे) की गढ़ी नेहरू की आवक्ष प्रतिमाएं भेंट की गईं। राजदूत एल्सवर्थ बंकर बिलकुल बाएं हैं।*

फुलब्राइट कहती हैं कि वह कहते थे कि यह कार्यक्रम अपने उद्देश्यों में जितना सफल रहा और जितनी तेजी से बढ़ा, उसकी उन्होंने कल्पना तक नहीं की थी। ''अपने जीवन के अंतिम दौर में वह फुलब्राइट प्रोग्राम को अपना सबसे महत्वपूर्ण योगदान मानते थे- और उनका जीवन तो अद्भुत था, उन्होंने कितने काम किए थे।''

फुलब्राइट का निधन 9 फरवरी 1995 को 89 वर्ष की आयु में हुआ। वह विदेश संबंधों की सेनेट समिति के सबसे लंबे कार्यकाल वाले अध्यक्ष रहे (यह रिकॉर्ड अब भी उन्हीं के नाम है) और 1959 से 1974 की अवधि में क्यूबाई मिसाइल संकट, शीतयुद्ध, और वियतनाम युद्ध से जुड़े ऐतिहासिक निर्णयों में उनकी भागीदारी रही। सेनेटर के रूप में उनका कार्यकाल 30 साल रहा। फुलब्राइट का जन्म समर, मिसौरी के एक समृद्ध परिवार में हुआ था। 16 साल की आयु में उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ अर्कान्सास में दाखिला ले लिया, 34 साल की आयु में वह उसके अध्यक्ष बनें। उन्होंने वकालत की, जस्टिस डिपार्टमेंट के वकील और कानून के अध्यापक रहे। कांग्रेस में नए सदस्य के तौर पर 1943 में फुलब्राइट ने एक प्रस्ताव पेश किया जिसमें शांति बनाए रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय संगठन में अमेरिका की भागीदारी का आग्रह किया गया, हालांकि शांति कहीं दिखाई नहीं दे रही थी- टाइम ने जनवरी 1965 में उनके प्रोफाइल में यह लिखा। पत्रिका ने इस अंक में उन्हें कवर पर पेश किया था।

लारिसा कॉर्न लॉग

फुलब्राइट आदान-प्रदान कार्यक्रम को विदेश नीति का वह महत्वपूर्ण उपाय मानते थे जो सशस्त्र संघर्ष के विकल्प उपलब्ध करवाने की दिशा में एक सार्थक कदम है। *द प्राइस ऑफ एंपायर* में वह लिखते हैं, ''शैक्षणिक आदान-प्रदान केवल अंतर्राष्ट्रीय मामलों के तहत चल रही अच्छी-अच्छी सी लेकिन हाशिए की गतिविधि नहीं है। भविष्य में विश्व शांति और व्यवस्था के दृष्टिकोण से देखें तो यह हमारी विदेश नीति गतिविधियों में शायद सबसे महत्वपूर्ण और फलदायी है।''

श्रीमती फुलब्राइट कहती हैं, ''वह चाहते थे कि भविष्य के संभावित नेता यह बात समझ लें कि दुनिया को देखने के जिस ढंग से वह परिचित हैं, उसके अलावा भी हमारे संसार में जीने और रहने के कई ढंग हैं। दूसरे देश में जाकर दूसरी संस्कृति में जीने का अनुभव पाने के बाद वह दूसरी संस्कृति में पले-बढ़े लोगों से मिलने-जुलने में अधिक रूचि ही नहीं लेंगे बल्कि इस में अधिक समर्थ भी होंगे। वर्तमान सरकार सहित सभी अमेरिकी सरकारें सांस्कृतिक राजनय के एक जबर्दस्त उपाय के रूप में फुलब्राइट प्रोग्राम का सम्मान करती हैं और मानती है कि इसकी लागत की अपेक्षा इसके लाभ बहुत अधिक हैं। ''

शीतयुद्ध के दौरान फुलब्राइट ने अपने विचारों को कार्यरूप दिया। श्रीमती फुलब्राइट बताती है: ''वह सोवियत राजदूत अनातोली डोब्रीनिन को अक्सर अपने घर आमंत्रित करते थे क्योंकि वह मानते थे कि अपने मित्रों से अंतरंगता रखनी तो बहुत जरूरी है ही, उससे भी अधिक जरूरी यह पता रखना है कि हमारे दुश्मन क्या सोच रहे हैं। वह राजदूत डोब्रीनिन को पसंद करते थे और उन से संपर्क बनाए रखते थे। वह सेनेट के अपने सहकर्मियों को भी आमंत्रित करते जिनमें से कुछ डोब्रीनिन के साथ बैठने तक से इनकार कर देते थे। लेकिन मैं बताती हूं कि विलियम के हस्तक्षेप के कारण अमेरिका-सोवियत संबंध बेहतर रह पाए। ... मेरा विश्वास है कि डोब्रीनिन और फुलब्राइट के संबंधों का गहरा संबंध क्यूबाई मिसाइल संकट को कम करने से रहा।''

श्रीमती फुलब्राइट दिल्ली में आयोजित ग्लोबल कॉन्फ्रेंस ऑन मेंटल हैल्थ की प्रमुख वक्ता के रूप में नेशनल बोर्ड फॉर सर्टिफाइड कांउसलर्स के निमंत्रण पर भारत आई थीं। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में जी रहे बच्चों को पढ़ाने में सफल रहे अमेरिकी स्कूलों में किए गए शोध के आधार पर बहुत गरीब, माता-पिता की सहायता के बिना जी रहे या अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषा बोलने वाले बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के प्रयासों के बारे में बात की।

वह बताती हैं, ''इन स्कूलों में यह देखने में आया कि अपने लिए एक समुदाय रचना शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। यह महत्वपूर्ण अंग है- क्योंकि अगर समाज में जी पाना सिखाने के लिए माता-पिता उपस्थित ही नहीं हैं तो यह जिम्मेदारी शिक्षा पर आ पड़ती है। दूसरी बात है कक्षा में सक्रिय हिस्सेदारी। इस बात का खास ख्याल रखा जाना चाहिए कि बच्चा कक्षा में अध्यापक का भाषण ही सुनता न रह जाए बल्कि गीत गाकर कहानी सुनाकर, गतिविधि में शामिल रहे ।

मॉस्को के एंग्लो-अमेरिकन स्कूल में जापान, फिनलैंड नॉर्वे के छोटे बच्चों को अंग्रेजी सिखाने का काम करते हुए उन्हें इस क्षेत्र में काफी नए अनुभव मिले। वह याद करती हैं, ''मैं इनमें से कोई भी भाषा नहीं बोलती थी, तीन रात न सो पाने के बाद मुझे याद आया कि खुद मैंने भी वर्णमाला एक गीत के माध्यम से सीखी थी।

मैंने उन्हें शिशुगीत सिखाए, 'बताओ मैं कौन हूं?'' खेलते हुए हंसते-हंसते हमारे आंसू निकल आते; मैं तस्वीरें बनाकर कहती कि तुम मुझे अपनी भाषा में इसका नाम बताओ, मैं अंग्रेजी में इसका नाम बताती। और वे सभी मजे-मजे में अंग्रेजी बोलना, पढ़ना और लिखना सीख गए''।

सेनेटर फुलब्राइट अक्सर कहते थे कि लोकतंत्र केवल विचारशील, जिम्मेदार और शिक्षित नागरिकों के बूते फलफूल सकता है। श्रीमती फुलब्राइट कहती हैं,'' वह पूरी मेधा का प्रयोग करके पढ़ाने की बात करते थे ताकि लोग अपने ढंग से सीख पाएं और जीवनभर सीखने का क्रम सभी के लिए संभव हो पाए''।

जे. विलियम फुलब्राइट द्वारा लिखित

**द प्राइस ऑफ एंपायर**

मुंबई, चेन्नई की अमेरिकी लाइब्रेरियों में उपलब्ध।

## हैरियट फुलब्राइट

2006 में स्थापित जे.विलियम एंड हैरियट फुलब्राइट सेंटर की अध्यक्ष हैं। सितंबर में इसकी वेबसाइट (www.jwhfulbright.org) शुरू हुई। सेंटर का उद्देश्य फुलब्राइट के विचारों के बारे में जानकारी बढ़ाना और उन्हें आगे की और बढ़ाने के कार्यक्रमों को लागू करना, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से संघर्ष को हल करने के अहिंसक उपायों और विश्व-शांति को बढ़ावा देना है। सेंटर का पहला काम फुलब्राइट के जीवन पर एक डॉक्यूमेंटरी फिल्म तैयार करना रहा जो उसकी वेबसाइट पर उपलब्ध है। अब श्रीमती फुलब्राइट फिलहाल यूनिवर्सिटी ऑफ आर्कान्सास के पुस्तकालय में संग्रहीत उनके भाषणों और कागजातों को ऑनलाइन उपलब्ध करवाने के लिए धन जुटा रही हैं।

## ज्यादा जानकारी

- फेलोशिप घोषणाओं के लिए देखें www.fulbright-india.org
- अमेरिका में अध्ययन संबंधी सूचना के लिए देखें www.educationusa.state.gov
- स्टेट डिपार्टमेंट का ब्यूरो ऑफ एजुकेशनल एंड कल्चरल अफेयर्स http://exchanges.state.gov
- जे. विलियम फुलब्राइट फॉरेन स्कॉलरशिप बोर्ड के नीति संबंधी निर्देश http://exchanges.state.gov/education/fulbright/ffsb